

2727 I

श्री॥ श्रीगणेश॥ श्रीगणेश

बावहिल्लोत्थाय पात्यगुहजनः कलधनामि प्रदक्षिणं कृत्वा वक्षामि द
क्षिणं हि मुखं ॥ स्वनाकलदयका उहाके प्रय ॥ ॥ ऊरुमाने क्षापेनायाकाया
अ-दक्षिणं स्वया-कलपनाखकिना उ-र्ययातक्ष-गलना उ-र्यसिसव
दकलकाय ॥ ॥ ॐ हिरिपिठकिना समापम् ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

2727 I

ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ ॥ अथ पिंड क्रिया लिख्यते ॥ ताय पोतास ॥
धूपाय ॥ ॐ मा ऊंका साइइ धलकसि हामा मधि ऊंजा रंगनाऊ ॥
रिगनाऊ गयजमसयाता सिसाहल कनाडु नखा कप मारणा थला
लयर १ धीवा १ गग्रास जाकि कूल १ बजिकूल १ कावकूल १ ॥

३
प्राणं सूर्यार्थयाय ॥ ॥ सकुंदास सिद्धलं किकाडा ऊऊमानया कनिक
॥ सिलसीवन्दनं दयात ॥ सकुंदास स्वान विविधन कयाडा ऊऊमान
या सिलसं मय सिलसिपुष्पं दयात मरिध निवजी निमहा प्रतिसुत्र
त्रक्र २ मां सर्वसत्त्वानां वंदं रूट् स्वाहा ॥ ॥ जाकि डालखडा सकुंदाया
ऊऊनहायका अं कय ॥ ॥ महादानकाय ॥ ॥ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः
कथा गनयणीयरुद्रकल्पसहानामला कथा कोवेव स्वकमेव नमः ॥ ॥

2

4

भवनविक्रयनाश ॥ ॥ धनमयकाय ॥ ॥ दानपक्रियकमानस्य
 नपालमधुल ललिताश्रिमहानगात्रवल्लिरकास्यपराशरात्यनमम
 कनामधेयस्य गृहसकलयनिवासायथाशक्तुं कुरुलसंप्राप्तिका
 मनार्थ स्वपिताश्रमकनामदिवंगतस्य इगमिमावन सङ्गतिरुलसंप्रा
 प्तिकामनार्थमाकृष्टानसखावमीरुवनरुलसंप्राप्तिकामनार्थमस्मि
 दिन्नरुयक्षमूलपिछुदानावनकर्मक्रियानिमित्तार्थमाशेषीसूर्याय

र्घनमः॥ ऊर्ध्वार्घनमः॥ प्रसर्गर्घनमः॥ पादोपादा र्घनमः॥ नखस्पर्शान्न
 यकः॥ ॥ वृक्षेन॥ श्रीसूर्यदेवताहृद्वाचकाय॥ ॐ देवज्युपंतिमं प्रयामि॥
 जाकिलस्पर्शार्घनय॥ ॥ श्रीसूर्यदेवताहृद्वाचकायपाशावमनार्घप
 तिरुस्त्रिहा॥ ॥ स्वानवाय॥ ॥ ॐ आदिस्त्रायनमस्त्रिहा॥ ॐ स्व
 मायस्त्रिहा॥ ॐ अंगान्नायस्त्रिहा॥ ॐ वृद्धायस्त्रिहा॥ ॐ बृहस्पतियस्त्रिहा
 ॐ शुक्रायस्त्रिहा॥ ॐ गतिश्रुतायस्त्रिहा॥ ॐ मोहवस्त्रिहा॥ ॐ कुरुवस्त्रिहा

[illegible]

सर्वपापघ्नप्रदामामिदिवाकत्र ॥ ॥ थुनिकर्मपापकृत्तलपालसा
 क्रिधकंधायक ॥ ॥ ॥ थनगुनूपादायकाय ॥ ॥ मय ॥ दानपति
 काय ॥ ॥ गुनूववजाचार्याय हस्तार्घ्यनमः ॥ ऊलार्घ्यनमः ॥ प्रत्यर्घ्य
 नमः ॥ पादोपादायार्घ्यनमः ॥ ॥ वंसेलकनक ॥ हस्तार्घ्यनमस्तुमि
 श्रीगुनूनाथप्रसिद्धम ॥ ॥ ॥ थनपूजाहस्तसंकल्पयोक्त ॥ ॥ ना
 वाय नाहपूजाहनायनयाडाथियकाडाकये ॥ ॥ ॐ नमो हरा

वह पृथक् हुवा जाय तथा गताया हे न सम्यक् वदाम ॥ नयथा ॥ प्रथ
२ महापृथक् पृथक् पृथक् सख्यपृथक् वकि नरधेय स्वाहा ॥ ॥ दानय
नियजमानस्य नयालमधुलल्लिलाप्रतिमहानगत्रवस्थि न कास्य
परगात्रमृकनामधायस्य गृहसकलपनिवा नाथमनादिगति सं
सात्र पूर्वजन्मनिवा ॐ हजन्मनिहाहाहा नरुतदग्न कृ गल पाप स

हि नृणां दिव्यादिगृहनाजवोनादकाग्नि विद्यगमुपनवक इहिकादि
नानाहयहवधननकद ॐ हजन्मनि सुखसंपदि पत्रजयमा क्रगति
संश्रुफिकामनार्थ मनुना सम्यक् वाधिहानरुल संश्रुफिकामनार्थ
नरुत्थर्मरुल संश्रुतन संपदि स्थि न कामनार्थ स्वपिना मृमकनामदि
वगत्स्य इगति मोचन सकृदिरुल संश्रुफिकामनार्थ माक्रुधान सखा व
निरुवनरुल संश्रुफिकामर्थ मृस्मिदिन विपक्रमल पिशुनार्थन

कर्मक्रियानिमित्तार्थः००० दं कमधुलपुष्पागुसंकल्पयामि ॥ ॥
 धनगुप्तमधुलदनक ॥ ॥ ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ ॥
 धनरुथिलसः कावलाकयाडा कृगनस्वचाकलउयक ॥ सं ॥ ॐ नमः
 सर्वदुर्गक्रियविराधनजाजाय कथागनायाह ॥ संम्यक् वद्वाय ॥ कथ
 था ॥ ॐ रगाधनरविराधनरसर्वयापविराधनस्वाहा ॥ ॥ का
 वलापाकायकाडा पूर्वसाचकं कथ ॥ वाक्याय ॥ नीलाश्वत्थिमुद्धि

च कुलानवकुलानां मधुना नागिका वाह । क्रीडादाय्यष्टादश ॥ द
धिवक्त्रिजानूत्याः कायनरुक्मपादया ॥ अनांशो सर्वगात्राय जायत वा ॥
धिवीर्यवान् अनाम्युजकगर्भानि मधुसर्पितिलकथा ॥ दधिवधुयनाश
का अष्टादशपिपुसंरुवा ॥ ॥ पिपुदानं महं कनिष्ठाधाय कज्जमान
॥ ॥ थनकावना संकल्पयाक ॥ ॥ अथ ॥ दानयत्तिकाय ॥ अ
स्मिं दिन पिपुदानां च न कर्मक्रियानि मिथुर्थं ॥ दंजलकृगमीलसंक

ह्यं सिद्धि नमु ॥ ॥ धनपिपुजायक ॥ ॥ पिपुहागकायकः कगन
 पुं धर्मधातुपिपुहागस्वाहा ॥ अपिनां महयथानाम्ननपिपुहागस्वधा ॥
 पिनां महयथानाम्ननपिपुहागस्वधा ॥ स्वपिनायथानाम्ननपिपुहागं
 स्वधा ॥ विकलायपिपुहागस्वधा ॥ न ॥ पिपुहाय सद्यमासगर्हस
 धनः ॥ हा मलनहाय ॥ सतिलायस्वधा ३ ॥ ॥ लाहाकवायक ॥ ॥
 x पिपुहाय सद्यमासगर्हस्वधा x ॥ ॥ वेष्. ॥ गायस मरुयाक ॥ क

॥ धनपिपुजाय नमः ॥

॥ यिधु राग कायः कृगन

ॐ धर्मधातुयिष्ठुहांगस्वाहा॥ अपिहांमहयथानाम्नमयिष्ठुहांगस्वाहा॥

पिनामहयथानाम्नेनपिदुहागस्वधी॥स्वपिनायथानाम्नेनपिदुहागं॥

स्वधा॥ विकलाय पिशुना गं स्वधा॥ ज ॥ पिशुनाय सशमां स गहं स

थनः हामननहाय ॥ सतिलायख ३ ॥ ॥ लाहा नवाय ३ ॥

५ पिण्डाय सद्यमा सगरु स्वधा ५ ॥ ॥ देव्यः ॥ गोत्राय स मरु याक ॥ क

भासनतय ॥ वाक् ॥ दानयति काय ॥ वाक् ॥ यथा कं तथा गतायाः पूर्वगत
मध्य स्वयन्निषात्रिणा दक्षिणाहिमूर्तं पिशुयीत्या विपश्चिना दवताया गि
विना विश्वरुसुथा ४ कुक्कुन्दप्रसन्नाया दवताया महाबला कनकाक्षस्य
दवडा १ श्रीमत्काश्वपस्य व प्रसन्नाभाक् सिंहस्य वृक्षद्रात्रिददश्वनाः
५ ४ दवप्रमूर्तानां मिदमास समाश्रिता ॥ नृपं धर्मथातुवागीश्वरुहात्र
काय ४ कुक्कुत्तनमपतिवृतां कुशवन्तुमपतिवृतां ॥ ॥ यंत्राणां माता

॥ यंत्राया ॥

१६ दवता रुद्रा न काय कृष्ण सनमपतिष्ठतां कृगवमुं मयतिष्ठतां ॥ ६० ॥

वेष्मन न दवता रुद्रा न काय कृष्ण सनमपतिष्ठतां कृगवमुं मयतिष्ठ

तां ॥ ६१ ॥ वृत्ता लपत कयक ॥ वसुध त्रीय उपा ड सखा हा ॥ ॥

लेखन हायक ॥ श्रीहि विं वा ड सखा हा ॥ ६२ ॥ स्नान जा कि कयक

उं सपूष्य सखा हा सपूष्या कत सखा हा ॥ ६३ ॥ लाहा कन कत ॥ श्रीवि

१७ पड पा ड सखा हा ॥ ६४ ॥ वेष्म जान कयक ॥ ६५ ॥ अथ दान यति

काय ॥ ॥ पूर्व ग वि सत्त्व वर्णा या व न हिः स फ नि वृत्त्यः स फ पु नू

धसः यष्म ता वि धा न सार्थ का स्य य ग ड सः ऊ ऊ मा न न अस्म क था य क

अस्म क ऊ ऊ मा न स्यः उ क नं धु ला स निला स मथ स घ न स घ शु स र्वा य

क न स सहि ना य यदि स य प्र य का मि स क नार्थ नं धु ल प्र य का मिः अ

जनका

यं धर्मं धनुवा गगनं सैयं सृष्टि विरुवज स्वाहा ॥ नय ॥ गगनं सतय ॥
 पंचगमा नाद वकार ह्यवकाय सृष्टि विरुवज स्वाहा ॥ ॥ ॥ सत
 नय ॥ वेधन नद वकार ह्यवकाय सृष्टि विरुवज स्वाहा ॥ ॥ ॥
 लखनं स्नानया क ॥ जलंगलं सकलं सति ॥ गज नकस्य महा सक
 लं तलंगलं रवहुनं यवमाहिधक ॥ ॥ साइइ न स्नानया क ॥ ल

स्व२

श्रीधनका वनारुं डेला वनाथ वज्र पद्म नु तलंगलं रवहुनं यव
 माहिधक ॥ ॥ ॥ यं नमस्तन स्नानया क ॥ सुतिलाय सदधि समधूः
 सपत्न सखधु सर्वाय क वसुहिनाय स्वाहा ॥ ॥ सांरुगुद्रमकं क
 न ॥ प्रतिविम्बसमाधर्मा आख्या शुद्धा हिला विला ॥ अनया काया व
 हनुकर्म समूहव ॥ ॥ जाकिलं खजानका वेधुथियकं नय ॥ ॐ

नमो ह्यगवतः वेनावनप्ररुक्कुवाजाय तथा गताया हेतुसंयक्तं वृद्धाय
॥ नमो ॥ ॐ शुभा २ सम २ भा २ दान २ अनालं व नलं व जगता वति
महा नज नितालं व निला कूल निर्वोरस सर्ववृद्ध विज्ञाना विष्टि ह
स्वाहा ॥ ॥ वेत्त रगा प्रो स मरुया नपा दार्घ्य नय ॥ हग वती मरु
ती २ स्वयं यु धर्म भुवा गगन वः पं वरा माता वेत्ता नव द वना रुद्रा न

काय पाशा नमना र्घ्य प्रतिक स्वाहा ॥ ॥ स्नान वाय ॥ वेत्त यान ॥ ॐ
आर्य वेना वना य स्वाहा ॥ ॐ अक्रा त्याय स्वाहा ॥ ॐ वत्त सुरु वाय स्वा
हा ॥ ॐ अमि नाहा य स्वाहा ॥ ॐ अमा य सिद्धि य स्वाहा ॥ ॐ ला वना य
स्वाहा ॥ ॐ मा मकी य स्वाहा ॥ ॐ पाठु ला र्घ्य स्वाहा ॥ ॐ ना वा र्घ्य स्वाहा ॥
॥ ॥ रगा प्रो स यान ॥ ॐ नन्दा य स्वाहा ॥ ॐ रुद्रा य स्वाहा ॥ ॐ ऊ या य

स्वाहा॥ॐ शोभाय स्वाहा॥ॐ कपिलाय स्वाहा॥ पंचगामा रुक्मवज्र
पृथ्वीति स्वाहा॥ ॥ मरुपात ॥ॐ वैष्णवाय स्वाहा॥ॐ मानि
रुद्राय स्वाहा॥ॐ पूर्वहाराय स्वाहा॥ॐ धनराय स्वाहा॥ॐ वैश्वदेवाय
वज्रपृथ्वीति स्वाहा॥ ॥ सिद्धलंका ॥ वन्दनं वन्दनानि वन्दनं
नमिना पूजां भयसमूहं नमः समय स्वाहा॥ ॥ ऊजं कां कां स्वाय कं

॥ वसुकी नरानपा नमिना पूजां भयसमूहं नमः समय स्वाहा॥ ॥
स्वानुदाय॥ मानिना धविनाति मांदा न वे च यकादिहि॥ हे मरुपात
नपृथ्वीति स्वाहा॥ ॥ शिवजी स्वाहा॥ दक्षिणी नमः वज्रदानपात
मिता पूजां भयसमूहं नमः समय स्वाहा॥ ॥ सिद्धलंकाय ॥
दुल्लल्लमधुं पूजा दा दिव दिह्ला दय कर्कशी वरुना नमः पुता निरु

primitiva

2727 I

कुं नमः



पद्मलता

2727 I

लक्ष्मणाय नमः ॥ ॥ धूप ॥ ॐ धर्मरथपुष्पध्यानपात्रमितापुष्पमद्यसमूह
सूत्रननसमयस्वाहा ॥ ॥ ॐ हल २ हल २ दीयदानपात्रमिता ॥ पूजा
मद्यसमूहसूत्रननसमयस्वाहा ॥ ॥ नायश्रुत ॥ ॐ श्रुतवाजका
यउपायपात्रमिता ॥ पूजा मद्यसमूहसूत्रननसमयस्वाहा ॥ ॥ ना
जयाय ॥ नमस्तु पंचवृक्षानां श्रुताद्यादिकूलं वयं ॥ मध्यमं चोचननाथ

पंचवृक्षनमस्तु ॥ ॥ प्रसिद्धिश्च महालक्ष्मी सर्वसंप्रतिदायकं ॥ न
दारुडाऊयासोम्या कपिलाय नमस्तु ॥ ॥ वृक्षसंविजनिजाकं च
प्रवर्धमहा हल ॥ वैष्णवनमहं वंदे सर्वसंप्रतिदायकं ॥ ॥ धर्मव
क ॥ ॐ मून २ महामूनः सुखावन्मनूगकुंडुस्वहा ॥ ॥ सकल्य ॥
यथादिमानरुलश्रुतसकल्यसिद्धिस्तु ॥ ॥ कर्मभूतेतिनाम

थयानि ॥ कृगप्रीकाया ॥ ॥ कृगगननय ॥ वाक ॥ दानयः
तिकाय ॥ यथाकृतथागतायां पूर्वगमश्च स्वयजियालिनदक्रियाहिः
मखयिभुयिन्ना विद्यग्निना दवनाया गिरिना विश्वरुक्ता ॥ कृकृ
न्दः प्रसन्नाया दवनायामहावलाः कनका रूप दवन्ता श्रीमन्काय
यस्य च प्रसन्नाः भक्तसिंहस्य वृक्षन्ता विददन्ताः प्रह दवप्रमखा

नामिदमाससमाशिता ॥ ॥ प्रयितामहयथानाश्रितकृगसन
मूपतिष्ठताः कृगप्रीका मूपतिष्ठताः कृगवन्तु मूपतिष्ठताः ॥
यितामहकृगगनमूपतिष्ठताः कृगप्रीका मूपतिष्ठताः कृगवन्तु
मूपतिष्ठताः ॥ ॥ स्वयितामहयथानाश्रितकृगसनमूपतिष्ठताः कृग
प्रीका मूपतिष्ठताः कृगवन्तु मूपतिष्ठताः ॥ ॥ स्वयितामहयथानाश्रितकृगसनमूपतिष्ठताः कृग

[illegible]

सहितायस्वधा ॥ ॥ लंखविय ॥ ॐ चंख १ महा प्रत्यक्ष पतिमिर
प्रत्यक्ष पतिमिरा यूप्रत्यक्षः हानसंखनाय विरु ॐ सर्वसंखनाय नि
शुद्धवर्मन गगनसमूहस्तथा वविशुद्धमहानयपतिवा प्रत्यक्ष ॥
सिध्व ॥ चन्दनं चन्दनाति वलपात्रमिता प्रजां मय समूहसूत्रनं सम
यस्वधा ॥ ॥ जंका ॥ वसुक्षीनदानपात्रमिता ॥ प्रजां मय समूह

सुवनं समयस्वध॥ ॥ तंगनाऊ हिंगनाऊ ॥ तंगनाऊ हिंगनाऊ य
य कृष्ण पूजां भयः समुद्र सुवनं समयस्वध॥ ॥ धनिनाकाय ॥
दक्षिणी नने वयदानपात्रमिता पूजां भय समुद्र सुवनं समयस्वध॥
रुल्लुल्लकाय ॥ रुल्लुल्लमधु पूजाः दादिं वजिरुला दय कर्कती चत
नानगपुनानिरुल्लकाय ॥ ॥ धय ॥ धर्म रधयधनपात्रमितापु

जां भय समुद्र सुवनं समयस्वध॥ ॥ दीय ॥ उं हल्लुल्लकाय रदी
यदानपात्रमिता पूजां भय समुद्र सुवनं समयस्वध॥ ॥ नायम
कृत् ॥ श्रुतनाऊकाय उपाय पात्रमिता ॥ पूजां भय समुद्र सुवनं स
मयस्वध॥ ॥ नाय ॥ नमस्तुभ्यं सिंहाय धर्मचक्रपर्वत ॥
उधु कंजगत्सर्व ॥ धय सर्व इर्गति ॥ ॥ विधुत्सर्व संकल्प ॥

रावा हाव विवर्जितं ॥ आत्मसिंहनमस्तु ॥ ७७ ॥ प्रकृति निर्मलं ॥ ॥
धर्मवक्त्रं ॥ ॐ मूत्रं २ महामूत्रं सुखा वन्नामेनूगकुंदुस्वधा ॥ ॥ सु
कल्प ॥ यथादिमानरुलं न्नसंकल्पं सिद्धिं नमु ॥ ॥ सिद्धां
लयाय जाय ॥ स्वर्गं लोकं पापुनमु संजति लोकं पापि नमु ॥ ॥
धनं लिपिपुयात कृष्णं गनरुय ॥ वाक् ॥ दानयति काय ॥ ॥ य

थाततथा गताया पूर्वगमध ॥ ॥ उपिनां महयथा नाश्नन कृष्ण
गनमूपतिष्ठतां कृष्णवन्मुमूपतिष्ठतां ॥ पिनां महयथा नाश्नन कृ
ष्णसूनमूपतिष्ठतां कृष्णवन्मुमूपतिष्ठतां ॥ स्वपिनायथा नाश्नन कृष्ण
गनमूपतिष्ठतां कृष्णवन्मुमूपतिष्ठतां ॥ विकल्पिपुयात कृष्णगनम
ूपतिष्ठतां कृष्णवन्मुमूपतिष्ठतां ॥ ॥ धूलानयनरुय ॥ ॥ वसं

धनीपदपादसुखधा॥ ॥ लंखनं हय॥ नृहिं चिंवाडसुखधा॥ ॥
 खानजा किरय॥ ॐ सुखसुखधा. सुपुष्पाकुरु सुखधा॥ ॥ लाहाकनकल
 ॥ अधिपदपादसुखधा॥ ॥ धनपिपुजा नकनय॥ नृय॥ दानपति
 काय॥ वाक॥ पूर्ववाधिसुखवर्णायां वत्रहि. सुफपुत्रधस. सुकनिधस. यू
 ष्माविधानमर्थ. काग्धयगध. ऊजमाननमस्मत्तुभयक. अस्मत्तुजमा
 नस्य. वरुनं दुलासतिलाय. सदीधिसमधू. सद्यु. सुवधु. सर्वापकनसहि

नाययदिसुयप्रयकामि. सुहृत्तार्थ. नंदुलप्रयकामि. नृयंप्रयितामहयथा
 नाम्ननरुस्मेपिपुं सुखधा॥ पूषसुखधा॥ ॥ पितामहयथानाम्ननरुस्मेपिपुं
 सुखधा॥ पूषसुखधा॥ ॥ स्वपितायथानाम्ननरुस्मेपिपुं सुखधा॥ पूषसुखधा
 ॥ ॥ किलादकविय॥ प्रयितामहयथानाम्नन. जलकूगकिलादकार्य
 सुखधा॥ ॥ पितामहयथानाम्नन. जलकूगकिलादकार्यसुखधा॥ ॥ स्व
 पितायथानाम्नन. जलकूगकिलादकार्यसुखधा॥ ॥ साइविय॥ कंकनि

पिधुं स्वानादिस्वानपिधुं विकलायनस्मेपिधुं स्वधा ॥ **पृथक् स्वधा ॥** ॥ मि
लादकविद्य ॥ विकल्पपिधुयः कलकृगः किलादकार्घ्यस्वधा ॥ ॥ साइइ ॥
कंकनिश्वावनीश् ॥ ॥ **पंचमः ॥** सतिलायसदधिसमथ ॥ ॥
लख ॥ **पृथक् ॥** महापृथक् ॥ ॥ **मिंदव ॥** चन्दनचन्दानिवलपाव ॥ ॥
ऊंका ॥ वसुक्तीनदान ॥ ॥ **कंगवाऊहिंगवा ॥** कंगवाऊहिंगवाऊ
षकपृथक् ॥ ॥ **रवीवजि ॥** दधिक्रीनदानपावमिना ॥ ॥ **रुत**

रुत ॥ रुतलंगमधूः पृथक् ॥ ॥ **धूप ॥** धर्मधूपध्यानपाव ॥ ॥
दीप ॥ **कल ॥** कालयदीप ॥ ॥ **नाय ॥** यधर्मा ॥ ॥ **नाय ॥** जिफा
नमुमहावाः रुफावेननीनदी ॥ रुफायामनसं वहात्वं वृद्धं पुरामाम्यहं
॥ ॥ **नीलयानिर्यक** ॥ **धर्मवज्र ॥** मूनरमहा ॥ ॥ **लकल्प ॥** यथदिमा
न ॥ ॥ **सिताहल** ॥ **यथाय ॥** स्वर्गलोकाय ॥ ॥ **धनहिं**

प्रजापाद॥ लाहकवाय॥ ॥ धालमधुलथियक॥ धांकात्रसर्वविघ्नाका
ववजहमि. सनख २ सर्वतथागतागतानां नृधितिवंकुक्कस्वाहा॥ ॥ धा
नासनवाय॥ सुपिगधअस्वाहा॥ ॥ आससिक्कलंति॥ चन्दनम
लयार्हंतंकम्बुनिकुक्कमात्रीकाभीलयघनसावव. प्रतिगृह्यथस्व॥
यलस्वा. उहस्वा. स्यानदकाकाय॥ यमोदकपूष्यनमः नीलादकपूष्यनमः
: चयंकपूष्यनमः नानासुगंधजातिपूष्यनमः॥ ॥ कायकिययाक॥

जायांवायकाय॥ दधित्रीनदानयात्रमितापूजांमघसमूडसूत्रं समयस्व
धा॥ ॥ खं. दा. ला. काय॥ मत्स्यमांसं श्रुज्जदानयात्रमितापूजांमघसमू
डसूत्रं समयस्वधा॥ ॥ थ. जय. ला. काय॥ ॐ नमः २ नमः प्रवक्षिष्ये
॥ ॥ आगवा. काय॥ सकलपिरुपिरुगराणांमन्त्रन. षट्जस. नन्नेवयरा
ऊनादिसंप्रक्षेपयाम्यह॥ ॥ लेखविष॥ ॐ श्रीरथदकनावमनप्रतिकुस्वधा
॥ ॥ ग्वय. ग्व. काय॥ सकलपिरुगराणांमन्त्रन. पूगतावलादिसंप्रक्षेपयाम्य

हं॥ कर्पूरममदिव्य॥ सकलपिरुगराख्य कर्पूरदीयसंप्रक्षेपयाम्यहं॥ ॥थ
नकं ग्वलनक॥ ॥गुणपूजा दक्षिण निसलाकाय॥ ॥वाहिविव्य॥ वाक॥
भावना सर्वसत्त्वावा मृदुजावा नृपिमावा मृदुपिमावा संगिनावा मृसंगिनावा
भवसंगिनावा नासंगिनावा सर्वसत्त्वावामनूगकुरुस्वधा॥ कायमाहाक
पूयक॥ कावलासजा किने पूजायाका थनो॥ ॥ऊऊमानपतिम सिद्ध
लतिक॥ स्वानदिव्य॥ आगिर्वदिव्य॥ ॥थनविसर्जनयाक॥ वाक॥
जगयुजावा संभवेतजावा औपपाउकावा

कृत्वेवं सर्वमत्त्वानो॥ ॥थनकृगनध्वय॥ धर्मकाहुडकिंस्वाहा॥ पंचरात्र
माहाउकिंस्वाहा॥ वेस्वानरद्वक्ताउकिंस्वाहा॥ सद्रुतिगमने॥ विकल्पाह
मृक्षपिमुहागंस्वधा॥ ॥पिमुअय॥ वाक॥ सनियजप्रमानन पिमुदयो
यामित्र उद्धविसफराडासां कर्मध्वनंशक॥ ॥लामलनेलाहाकवायक॥ ॥
धूयकय॥ वस्त्रमहावस्त्र कृगतिमार्गविना भयसंगतिमार्ग ध्वयप्रदर्भय॥
दीयकय॥ ॥दीयंप्रदर्भय॥ ॥पिस्वाहूप्रसन्नस्वधनाथय॥ वाक॥ वदिका